जैन जी. के.

General Knowledge

भाग - 4

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

1 प्रार्थना

हे भगवान !

अब समझ गए हैं हम,
सब कुछ जान गए हैं हम।
किन भावों को करेंगे हम,
तो क्या फल भोगेंगे हम।
यदि आपकी भक्ति करेंगे हम,
तो शुभभाव ही तो करेंगे हम।
व्रत-उपवास भी करेंगे हम,
तो पुण्य ही तो बांधेंगे हम।
तब सोने की बेड़ी पहनेंगे हम,
स्वर्ग में ही तो जाएँगे हम।
यदि आत्मभक्ति करेंगे हम,
तो ही शुद्धभाव करेंगे हम।
तभी कर्मों की जड़ें कटेंगी,
तभी मोक्ष में जाएँगे हम।

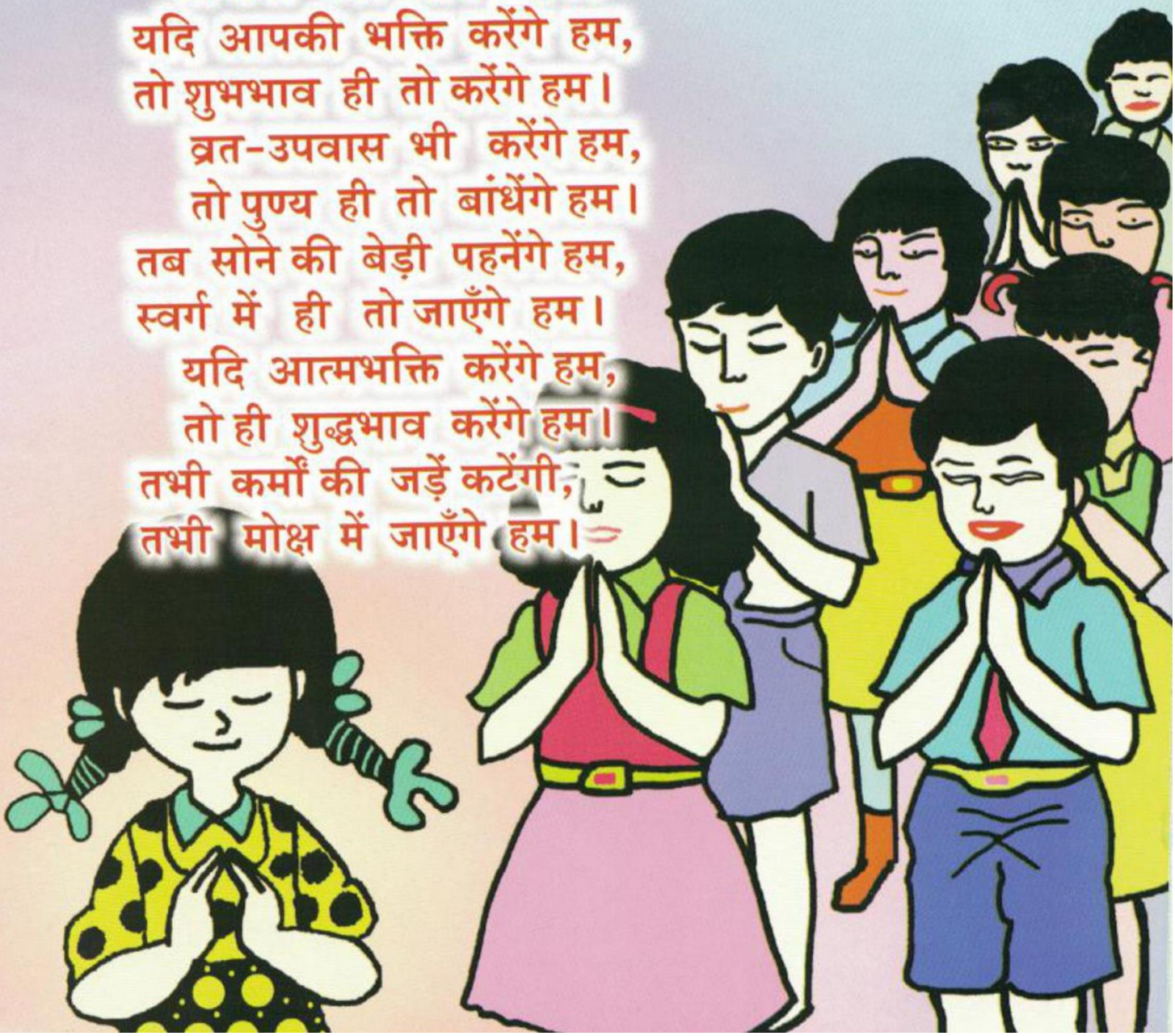

2 क्या है मुक्ति ?

दु:खों से पूर्ण निवृत्ति है मुक्ति,
निराकुल आनन्दमयी है मुक्ति।
अनादि से नहीं मिली हमें अब तक मुक्ति,
एक बार मिलने पर अनन्त काल रहती मुक्ति।
मनुज जन्म में ही मिलती मुक्ति,
आत्मभक्ति से होती मुक्ति।
अनन्त शक्ति प्रगट करा देती मुक्ति,
परमात्मा ही बना देती हमें मुक्ति।
दु:खों से पूर्ण निवृत्ति है मुक्ति,
निराकुल आनन्दमयी है मुक्ति।

3 आचार्य

इनके होने पर अनुशासन रहता साधुओं में,
जैसे मॉनीटर होने पर अनुशासन होता कक्षा में।
मुख्यतः आत्मा में लीन रहते हैं जो,
कभी - कभी धर्मोपदेश भी देते हैं वो।
प्रायश्चित विधि से शुद्ध करते हैं जो,
दीक्षा चाहने वाले को दीक्षा देते हैं वो।
मुनिसंघ के नायक हैं जो,
बताओ कौन हैं वो?

आचार्य

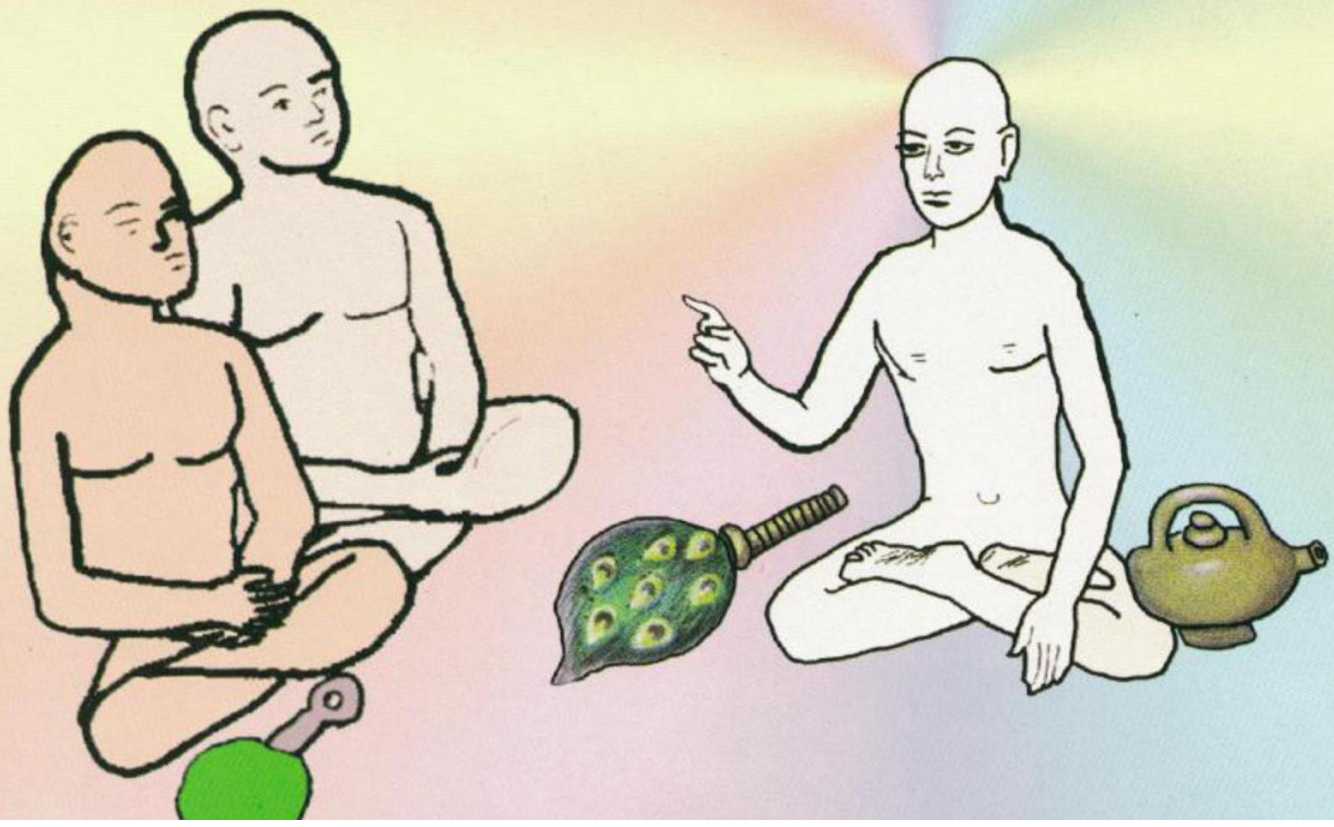

4 उपाध्याय

बहुत जैन शास्त्रों के ज्ञाता होते जो,
संघ में पठन-पाठन के अधिकारी होते वो।
शास्त्रों को पढ़ते भी हैं, पढाते भी हैं जो,
पर अधिकतर आत्मा में लीन रहते हैं वो।
मुख्यतः द्वादशांग के पाठी होते जो,
साधुओं में कौन सा पद प्राप्त करते ज्ञानी वो?

उपाध्याय

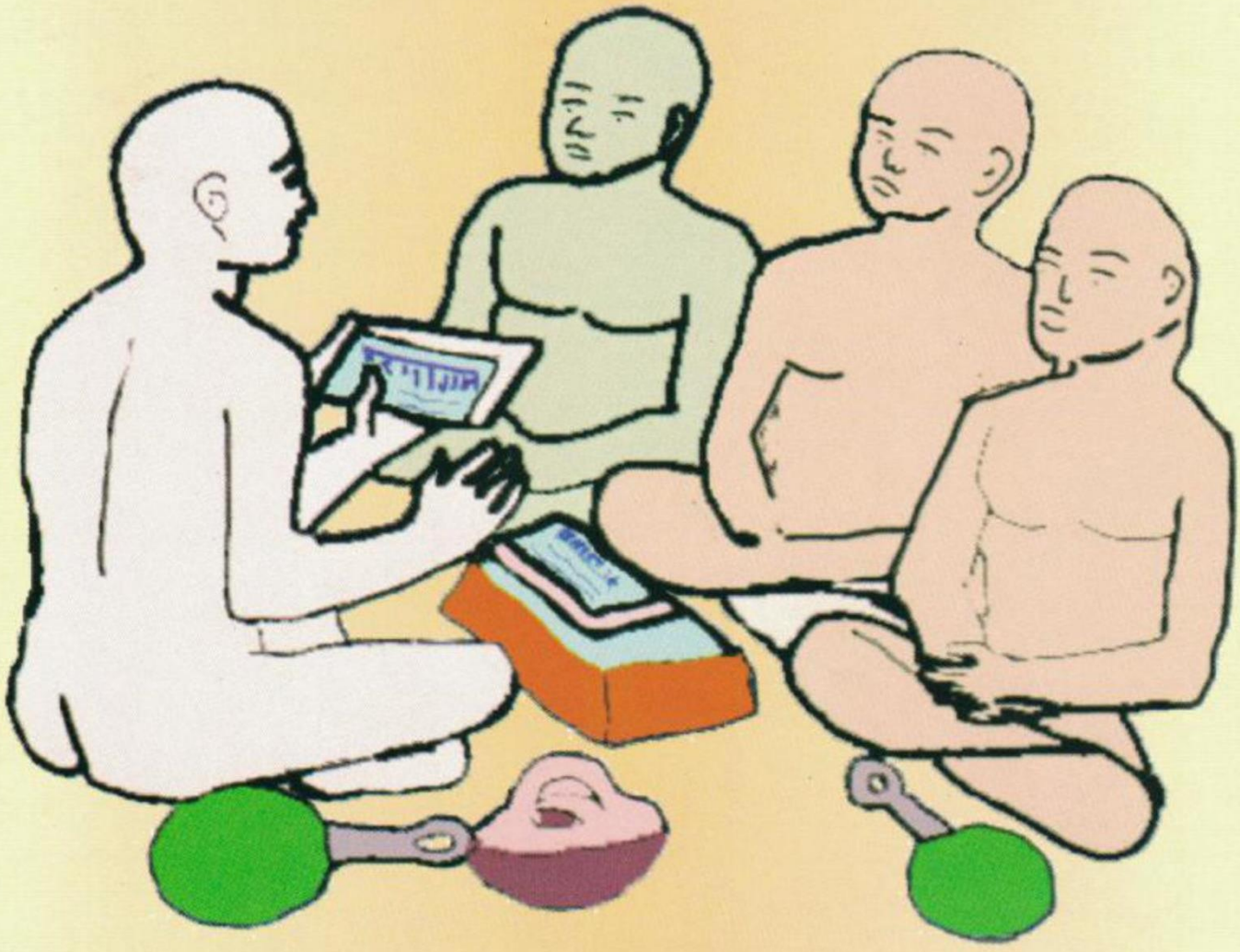

5 सामान्य साधु

समस्त भोगों से वैराग्य हुआ जब,
सांसारिक प्रपंचों से दूर हुए तब।
समस्त परिग्रह का त्याग हुआ जब,
ज्ञान - ध्यान में लवलीन हुए तब।
अपने उपयोग को बहुत भ्रमाया नहीं जिन्होंने,
अपने को आपरूप अनुभव किया उन्होंने।
शुभोपयोग को भी हेय माना जिन्होंने,
शुद्धोपयोग रूप मुनिधर्म अंगीकार किया उन्होंने।
अशुभोपयोग नहीं होता जिनको,
बताओ क्या कहते उनको?

सामान्य साधु

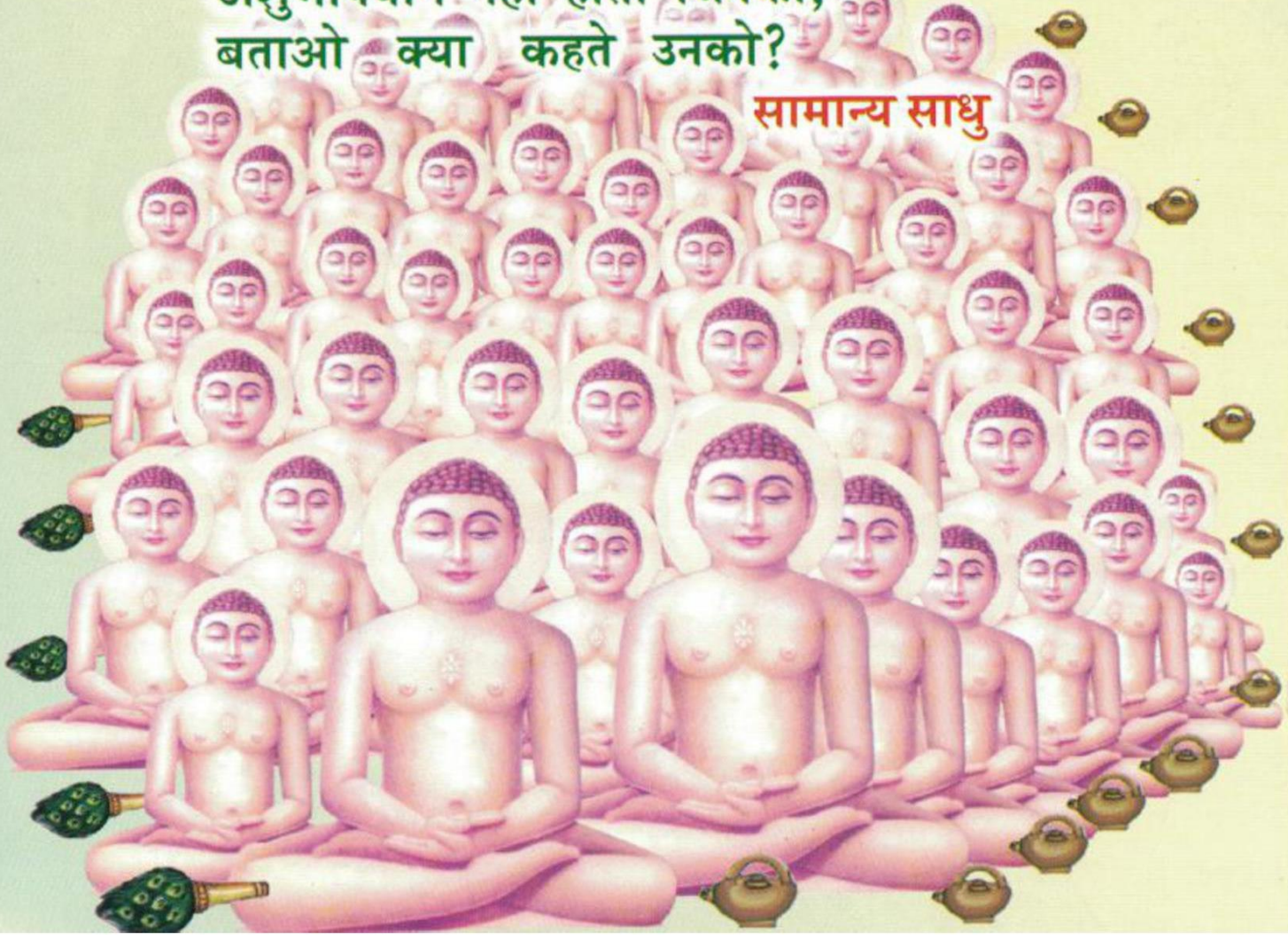

6 रत्नत्रय

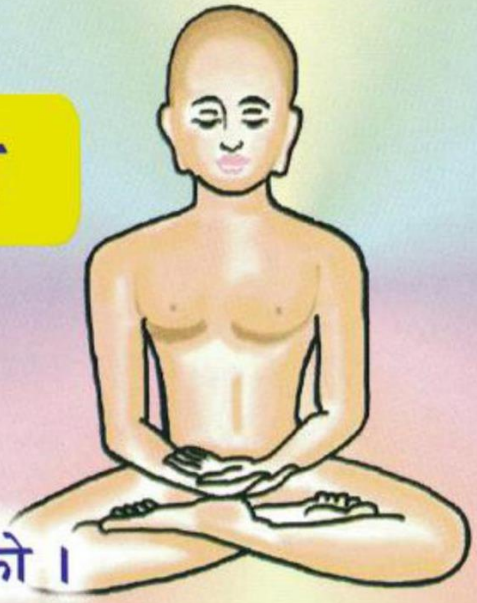

1. रत्नत्रय किसे कहते हैं ?
   सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र को ।
2. सम्यग्दर्शन क्या ?
   आत्मश्रद्धान ।
3. सम्यग्ज्ञान क्या ?
   आत्मज्ञान ।
4. सम्यक्चारित्र क्या ?
   आत्मलीनता ।
5. श्रद्धान का श्रद्धेय ?
   निज - आत्मा ।
6. ज्ञान का ज्ञेय ?
   निज - आत्मा ।
7. ध्यान का ध्येय ?
   निज - आत्मा ।

8. क्या रत्नत्रय से बंध होता है ?
   नहीं, रत्नत्रय मुक्ति का ही कारण है ।
9. क्या अन्य उपाय से मुक्ति संभव है ?
   नहीं, रत्नत्रय ही मुक्ति का कारण है ।
10. क्या मुक्तिमार्ग तीन हैं ? नहीं तो क्यों ?
    नहीं, तीनों की आत्मा में एकता ही मुक्तिमार्ग है।

7 द्रव्य कर्म

1. किन कर्मों के निमित्त से जीव के स्वभाव का घात होता है ?
   घातिकर्म।
2. किन कर्मों के निमित्त से जीव को शरीर - आदि बाह्य सामग्री का संबंध होता है ?
   अघातिकर्म।
3. किन कर्मों के निमित्त से जीव के ज्ञान - दर्शन स्वभाव प्रगट नहीं होते हैं ?
   ज्ञानावरण, दर्शनावरण।
4. दुःखी कौन से कर्म के निमित्त से होते हैं ?
   मोहनीय कर्म के उदय से।
5. दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य के विघ्न में कौन सा कर्म निमित्त होता है ?
   अंतराय कर्म का उदय।
6. अनुकूल - प्रतिकूल बाह्य संयोग प्राप्त होने में कौन सा कर्म निमित्त होता है ?
   वेदनीय कर्म का उदय।
7. शरीर के साथ संबंध रहने में कौन सा कर्म निमित्त होता है ?
   आयु कर्म का उदय।
8. शरीर की रचना में कौन सा कर्म निमित्त होता है ?
   नाम कर्म का उदय।
9. उच्च - नीच कुल की प्राप्ति में कौन सा कर्म निमित्त होता है ?
   गोत्र कर्म का उदय।

8 क्या आप जानते हैं ?

1. कर्म रूप कौन सा शरीर होता है ?
   कार्माण शरीर।
2. कार्माण शरीर का दूसरा नाम क्या है ?
   द्रव्यकर्म ।
3. शरीर कितने प्रकार के होते हैं ? नाम बताइए ।
   पाँच - औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस और कार्माण।
4. औदारिक, वैक्रियक, आहारक और तैजस शरीर को क्या कहते हैं ?
   नोकर्म।
5. संसारी जीव के साथ अनादि से अब तक लगातार[1] कौन सा शरीर है ?
   तैजस और कार्माण ।
6. पांचो शरीर उत्तरोत्तर सूक्ष्म हैं या स्थूल ?
   सूक्ष्म ।
7. सब से सूक्ष्म कौन सा शरीर है ?
   कार्माण ।
8. क्या आहारक और वैक्रियक शरीर एक साथ हो सकते हैं ?
   नहीं ।
9. अधिक से अधिक एक साथ कितने शरीर हो सकते हैं ?
   चार ।

1. संतति अपेक्षा ।

9 बताओ तो जानें ?

1. जीव के साथ कर्मों का बंधन किन भावों से होता है ?
   मचेह के उदय से होने वाले मिथ्यात्व राग - द्वेषादि भावों से।
2. रागादिक भाव कर्म का कारण कौन से कर्म हैं ?
   ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म ।
3. ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्म का कारण कौन से कर्म हैं ?
   रागादिक भावकर्म।
4. भावकर्म जीव हैं या अजीव ?
   जीव ।
5. द्रव्यकर्म जीव हैं या अजीव ?
   अजीव ।
6. अजीव द्रव्यकर्म किस द्रव्य का बना है ?
   पुद्गलद्रव्य का।
7. क्या द्रव्यकर्म कभी जीवरूप हो सकते हैं ?
   नहीं, द्रव्यकर्म का कोई भी परमाणु कभी भी जीवरूप नहीं हो सकता ।
8. क्या जीव का कोई प्रदेश द्रव्यकर्म रूप हो सकता है ?
   नहीं, जीव का कोई प्रदेश कभी भी कर्म रूप नहीं हो सकता ।
9. क्या द्रव्यकर्म जीव को दुःखी कर सकता है ? सर्तक उत्तर दीजिए ।
   नहीं, क्योंकि जीव व पुद्गल दोनों भिन्न - भिन्न द्रव्य हैं और एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता नहीं है।
10. क्या कर्म आत्मा को जबरदस्ती विकार करा सकते हैं ?
    नहीं ।

10 भक्ति से मुक्ति

आत्मा में लीन होना ही है आत्मध्यान,
आत्मा को जानते रहना है आत्मध्यान ।
करना है यदि हमें अपना कल्याण,
तो करना ही होगा हमें आत्मध्यान ।
सच्ची भक्ति आत्मध्यान ही,
आत्म भक्ति भी आत्मध्यान ही।
सहज धर्म भी आत्मध्यान ही,
आत्मधर्म है आत्मध्यान ही।
आत्मध्यान से होती दुःख निवृत्ति,
आत्मध्यान से ही होती है मुक्ति।
यदि आत्मध्यान ही आत्मभक्ति है,
तो कौन कहता है भक्ति से नहीं होती मुक्ति ?

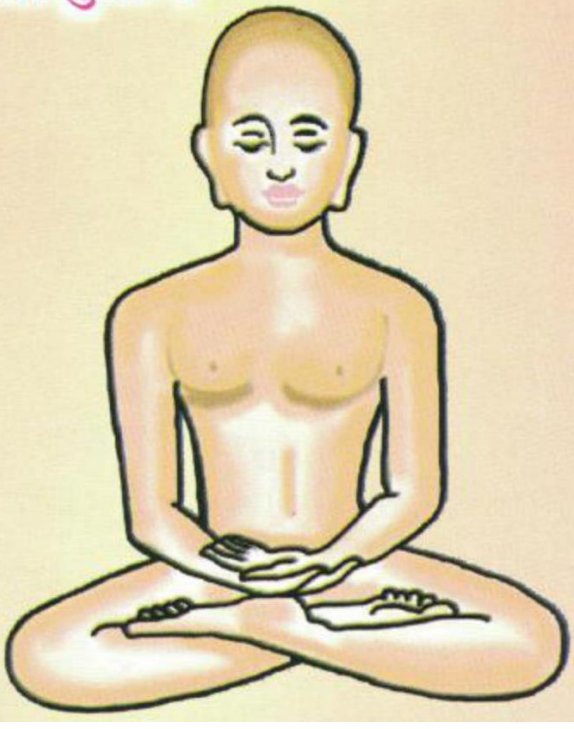

11 प्राण

1. जिनके द्वारा जीव जीता है, उन्हें क्या कहते हैं ?
   प्राण।
2. प्राण कितने प्रकार के होते हैं ? नाम बताइए ।
   दो- निश्चयप्राण (भावप्राण) और व्यवहारप्राण (द्रव्यप्राण)
3. निश्चयप्राण किसे कहते हैं ?
   चैतन्यप्राणों को।

4. चैतन्यप्राण से क्या तात्पर्य है ?
   जीव की ज्ञान -दर्शन रूप चैतन्य शक्ति ही चैतन्यप्राण है।
5. व्यवहारप्राण किससे बने हैं ?
   पुद्गल से।

6. व्यवहारप्राण कितने होते हैं ? नाम बताइए ।
   दश - आयु, श्वासोच्छवास, पांच इन्द्रिय और तीन बल।
7. तीन बल प्राण कौन -कौन से हैं ?
   काय, वचन और मन ।

8. पाँच इन्द्रिय प्राणों के नाम बताइए ।
   स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण।
9. एकेन्द्रिय जीवों के कितने प्राण होते हैं ?
   चार (आयु, श्वासोच्छवास, स्पर्शन इन्द्रिय और काय)
10. संज्ञी पंचेन्द्रियों के कितने प्राण होते हैं ?
    दश ।

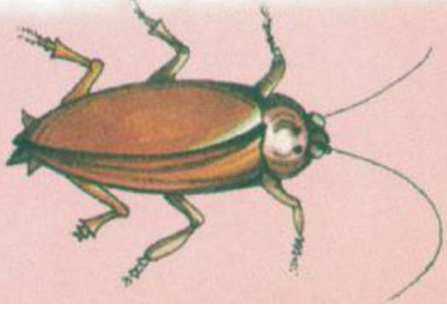

12 चैतन्य प्राण

चैतन्य प्राणों से जीते हैं सभी।
ध्यान नहीं गया इस पर कभी।
दश प्राणों से जीते हैं सभी।
मानते यही रहे हम सभी॥
दश प्राणों को ही बचाने का प्रयत्न करते रहे सभी,
चैतन्य प्राणों पर ध्यान नहीं दिया कभी।
शव यात्रा देखी जब,
चैतन्य प्राणों पर ध्यान गया तब।
दश प्राणों की पुष्टि भी काम न आई तब,
चैतन्य प्राण निकल गए जब।

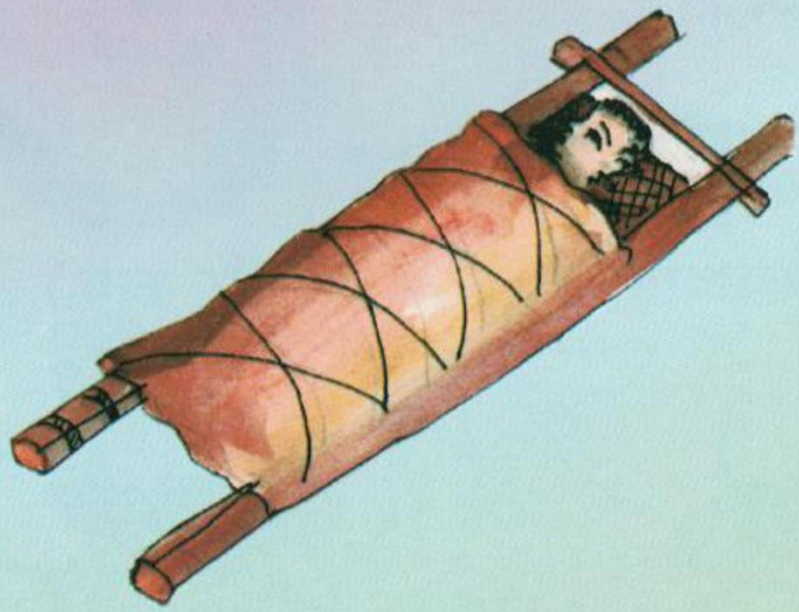

13 उपयोग

1. उपयोग किसे कहते है ?
   ज्ञान - दर्शनरूप चेतना गुण की परिणति को।
2. साकार उपयोगमयी कौन सी शक्ति है ?
   ज्ञान शक्ति।
3. साकार उपयोग किसे कहते है ?
   भेद सहित विशेष जानने को।
4. निराकार उपयोगमयी कौन सी शक्ति है ?
   दृशि शक्ति।
5. निराकार उपयोग किसे कहते है ?
   भेद रहित सामान्य अवलोकन को।
6. ज्ञान - दर्शन किस गुण की पर्यायें हैं ?
   चेतना गुण की ।
7. ज्ञान शक्ति के कारण आत्मा क्या कहलाता है ?
   ज्ञाता ।
8. दृशि शक्ति के कारण आत्मा क्या कहलाता है ?
   दृष्टा ।
9. क्या आत्मा कभी ज्ञान - दर्शन से रहित हो सकता है ?
   नहीं, क्योंकि ज्ञान और दृशि शक्ति आत्मा का स्वरूप होने से आत्मा में सदा रहती है।
10. क्या अन्य द्रव्यों में भी ज्ञान - दर्शन पाया जाता है ?
    नहीं, क्योंकि ज्ञान और दृशि शक्ति आत्मा (जीव) के अतिरिक्त अन्य द्रव्य में नहीं होती ।

14 जिनागम से

1. दो इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीव क्या कहलाते हैं ?
   त्रस ।
2. त्रस जीव कहाँ रहते हैं ?
   तीनलोक में त्रसनाली के भीतर ही ।
3. संसारी जीव अधिक से अधिक त्रस पर्याय में कितने समय तक रह सकता है ?
   साधिक दो हजार सागर ।

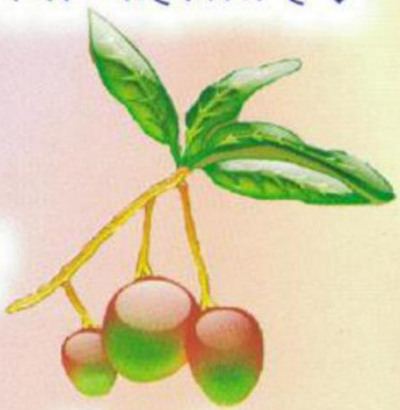

4. जिन पदार्थों के खाने से त्रसजीवों का घात होता हो, उन्हें क्या कहते हैं ?
   त्रसघात।
5. त्रसजीवों के शरीर के अंश का नाम क्या है ?
   मांस ।

6. मांस की उत्पत्ति किन जीवों के घात से होती है ?
   त्रसजीवों के घात से।
7. मांस में निरंतर कितने त्रस जीव उत्पन्न होते रहते हैं ?
   अनंत ।
8. अंडा मांसाहार है या शाकाहार ?
   मांसाहार ।
9. शाकाहार किसे कहते है ?
   वनस्पति से उत्पन्न खाद्य को।

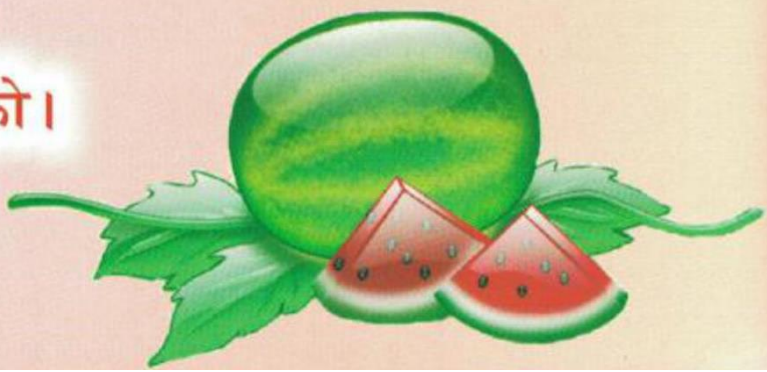

15 जानता नहीं जिसको...

मन :जानता नहीं जिसको मैं,
त्याग कैसे करूँ उनका मैं ?
ऊमर - कठूमर पाकर फल क्या होते हैं ?
क्या बड़ - पीपल फल भी खाद्य होते हैं ?

गुरुजी :जानते नहीं[1] तुम जिसको,
खाना नहीं कभी उसको।
ऊमर - कठूमरादि पंच उदुम्बर कहलाते,
इनके मध्य अनेक त्रस जीव पाए जाते।
पंच उदुम्बर को छोड़ो अब तुम,
तीन मकारों[2] का त्याग करो तुम।
खाना नहीं कभी इनको जीवन में,
अभक्ष्य होते हैं ये जिनशासन में।

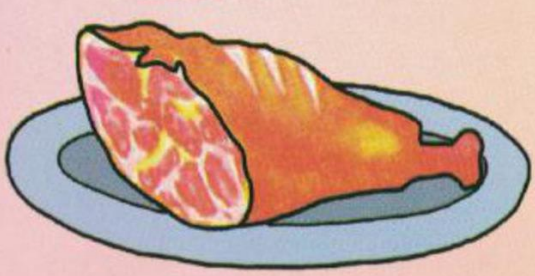

1 अंजान फल । 2 मद्य, मांस, मधु

16 अनुभव करता था .....

अनुभव करता था जिस का निशदिन मैं,
इंकार करता था सत्ता से ही उसकी मैं।
ऐसे गहन अंधकार में डूबा था मैं,
जाननेवाले को ही नहीं जान रहा था मैं।
जिस डाल पर बैठा था मैं,
उसकी सत्ता से मुकर रहा था मैं।
अपनी माँ को ही वंध्या कह रहा था,
आत्मा के सही स्वरूप को नहीं जान रहा था।
शरीर को ही आत्मा मान रहा था,
इसलिए अपनी सत्ता से इंकार कर रहा था।
अपना स्वरूप अब पहचाना मैंने,
छहों द्रव्यों का सही स्वरूप जाना मैंने।
पांच द्रव्य आँखों से दिखते नहीं,
पर उनकी सत्ता से इंकार कर सकते नहीं।
जैसे काल को अनुभव करते हैं हम,
पर काल को देख नहीं सकते हैं हम।
वैसे आत्मा का अनुभव करते हैं हम,
आत्मा को देख नहीं सकते हैं हम।
आत्मा नहीं बना पुद्गल से,
आत्मा दिख नहीं सकता आँखों से।
आत्मा तो अरूपी ही है,
आत्मा त्रिकाली ध्रुव एक ज्ञानरूप ही है।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, ललितपुर - झांसी के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री अभिनंदनकुमार टड़ैया के सुपुत्र श्री अविनाशकुमार टड़ैया की धर्मपत्नी एवं प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर(मध्यप्रदेश) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ। अध्यात्मिक वातावरण एवं धार्मिक संस्कारों में पलीपुसी डॉ. शुद्धात्मप्रभा निरंतर अध्ययशील रही है। सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का डायमंड एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती ही हैं, पंडित टोडरमलस्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित, शिक्षण - प्रशिक्षण शिबिरों में भी आपका सराहनीय योगदान रहता है।

इन शिक्षण - प्रशिक्षण शिबिरों में बालमनोविज्ञान की विशेषज्ञा एवं विविध बालसाहित्य की रचयिता डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया द्वारा बालकों के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें बालक कम समय में अधिक से अधिक तत्त्वज्ञान प्राप्त करते है।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा बचपन से ही प्रतिभाशाली रहीं हैं। आपने बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया। आपके द्वारा एम. ए. में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई। इस कृति में आ. अमृतचंद्र के व्यक्तित्व के साथ - साथ पुरुषार्थसिध्युपाय ग्रंथ का विभिन्न दृष्टि से समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। पी.एच. डी. के शोध-प्रबंध में आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथो की समस्त विषय वस्तु को सीधी-सादी, सरल-सुबोध भाषा में संक्षेप में प्रस्तुत किया ही है, साथ-ही-साथ उनकी अमृतचंद्रीय और जयसेनीय टीकाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न - भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

बाल मनोविज्ञान और बाल मनोभावों को समझते हुए उनके सरल मन को धार्मिक ज्ञान देने के लिए संवाद शैली में लिखी चलो पाठशाला : चलो सिनेमा भाग - १, भाग - २, और आधुनिक शैली में लिखी गईं जैन नर्सरी, जैन के. जी. भाग - १, भाग - २, भाग - ३ बालकों को लुभाने में अत्यंत सफल रही हैं। दो साल की अल्पावधि में सवा लाख प्रतियों का बिक जाना इन पुस्तकों की भाषा - शैली आदि की लोकप्रियता का प्रबलतम प्रमाण है। बाल पुस्तकों की इसी श्रृखंला में ७ से १० वर्ष तक के बच्चों के दृष्टिकोण से लिखी गई जैनदर्शन की सामान्य जानकारी देने वाली जैन जी. के. के चार भागों का एवं जैन शब्दावली की जानकारी देने वाली शब्दों की रेल पुस्तक का प्रकाशन हम कर रहे हैं।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी २२ पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनकी सूची अंदर प्रकाशित की गई है।